बड़गीत

महापुरुष श्रीश्रीशंकरदेव

(और उनके प्रधान शिष्य श्रीश्री माधवदेव)

विरचित

प्रकाशक :
श्रीमन्त शंकर धर्म्म कृष्टि केन्द्रीय परिषद
गुवाहाटी (असम)

प्रथम संस्करण
६ भाद्रपद १८६० शकाब्द
(ई० २५।८।६८)

प्रकाशक का निवेदन

महापुरुष शंकरदेव के बारे में असम के बाहर भारत के कम ही लोग जानते हैं। जिस महापुरुष ने भारतीय मुख्य धर्म-शास्त्र की सम्मति से भारतीय तथा सारी मानव जाति की भक्ति, मुक्ति संहति साधन का सार्वजनीन सनातन सुगम पथ प्रवर्तन किया हो, उस महापुरुष का परिचय और अमूल्य अवदान आदि केवल असमीया लोगों के बीच ही इतने दिनों तक सीमित करके रखने से कितना बड़ा अन्याय हो रहा है, थोड़ी सी चिन्ता करके देखने से सहज ही यह बात समझ में आ सकती है। वास्तव में उन्होंने सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रसार के लिए ही सर्वभारतीय भाषा में जिन पुस्तकों की खुद ही रचना की है, उन सबको भी इतने दिनों तक सम्पूर्ण भारतवर्ष में व्यापक रूपसे प्रसारित न कर

सकना निश्चय ही हमारी एक अक्षम्य भूल है, इसे स्वीकार करना होगा ।

शंकरदेव ने बहुत सी धार्मिक पुस्तकों की रचना की है। संस्कृत भाषा में भक्ति रत्नाकर और हिन्दी तथा असमीया-मिश्रित ब्रजावली भाषा में बरगीत और अंकिया नाट समूह ऐसे प्रमुख ग्रन्थ हैं जिनकी रचना उन्होंने भारत और भारत के बाहर प्रचार के लिए ही की थी ।

इस वर्ष महापुरुष शंकरदेव की चतुर्थ शत वार्षिकी तिरोभाव तिथि के उपलक्ष में हम उनके बरगीत (उनके प्रधान शिष्य महापुरुष माधवदेव द्वारा लिखित २० बरगीतों सहित) देवनागरी लिपि में छपवाकर सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रसारित करने हेतु अग्रसर हुए हैं । चरित पूथि के अनुसार महापुरुष शंकरदेव ने २४० बरगीतों की रचना की थी । किन्तु घर में आग लग जाने के कारण उनकी बरगीत पुस्तक जल गई थी जिसमें से लगभग ३० बरगीतों का ही उद्धार किया जा सका था ।

महापुरुष शंकरदेव ने भगवान के प्रति अनन्य भक्ति निवेदन में सहायक उपकरण के रूप में राग और तालयुक्त उच्चाङ्ग संगीत के सुर लालित्य से बरगीत गाने की प्रथा की व्यवस्था की थी । उदाहरणस्वरूप इस पुस्तक के अन्तिम भाग में दो बरगीतों की स्वरलिपि भी प्रकाशित की गई है ।

इन बरगीतों में महापुरुष शंकरदेव के धर्ममत का बड़ा ही स्पष्ट संकेत मिलता है ।

इन बरगीतों का शुद्ध पाठ करने में स्वर्गीय कान्तिराम आतै बूढ़ा भगत तथा स्वर्गीय हरिनारायण दत्त वरुवा साहित्यरत्न द्वारा प्रकाशित पुस्तक एवम् प्रमुख सत्र बरपेटा के श्रीयुक्त हरिराम वायन से सहायता ली गई है।

पुरानी हस्तलिखित बरगीतों की पुस्तक में बरगीतों के साथ ताल का उल्लेख नहीं है। प्रस्तुत पुस्तिका के बरगीतों के ताल बरपेटा के सत्र के अनुसार दिये गये हैं। बटद्रवा और कमलाबारी आदि सत्रों के अनुसार ये ताल कुछ भिन्न हैं।

इन बरगीतों में प्रयुक्त जिन शब्दों का अर्थ हिन्दी भाषा-भाषी नहीं समझ पायेंगे, उनके लिए हिन्दी प्रर्यायवाची श्रीयुत कमलचन्द्र बायन द्वारा टिप्पणी में संयोजित किये गये हैं।

इस पुस्तक के प्राक्कथन में संगीत विशारद श्रीयुत खगेन्द्र नाथ दास महोदय ने बरगीत के विषय में एक परिचयात्मक संक्षिप्त लेख लिखा है। इसके लिए हम उनके आभारी हैं। हम आशा करते हैं कि महापुरुष के द्वारा रचित बरगीतों को पढ़कर तथा गाकर पाठकों को भगवान के प्रति भक्ति निवेदन में अनुप्रेरणा मिलेगी और वे उपकृत होंगे।

बरगीतों के साथ-साथ बरगीत रचनाकारी महापुरुष शंकरदेव का परिचय देना भी आवश्यक हो जाता है। किन्तु महापुरुष शंकरदेव की बहुमुखी प्रतिभा, सुदीर्घ कर्ममय जीवन का एवं कल कृष्टि साहित्य एवम् धर्म के क्षेत्र में उनकी अमूल्य एवम् अपरिमित देन का पूर्ण विवरण देना इस छोटी सी पुस्तिका के सीमित

कलेवर में कठिन है ।

'महापुरुष शंकरदेव का संक्षिप्त परिचय'

अनन्य भजनमूलक एक शरण नामधर्म के प्रवर्तक और असमीया भाषा-साहित्य संस्कृति संहति के जनक महापुरुष श्रीश्रीशंकरदेव का जन्म सन १४४९ ई० तदनुसार १३७१ शकाब्द आश्विन मास में वर्तमान असम राज्य के नौगाँव जिलान्तर्गत आलिपुखरी (बटद्रवा) नामक गाँव मे हुआ था । इनके पिता का नाम कायस्थ शिरोमणि कुसुम्बर भुइयां और माता का नाम सत्यसन्धा था ।

महापुरुष शंकरदेव को जन्म से ही एकेश्वर उपासना के तत्व की उपलब्धि हो गई थी । उसका प्रमाण उसी समय मिल गया था जव वे १२ वर्ष की अवस्था में ब्राह्मण पण्डित महेन्द्र कन्दलि के विद्यालय में विद्याध्यन के लिए गये । जब गुरु ने उनसे सर्वप्रथम दुर्गाकी वन्दना करके पाठ आरम्भ करने को कहा तो बालक शंकरदेव उनसे सहमत नहीं हुए । वरन्, उन्होंने भगवान की स्तुति करके पाठ आरम्भ किया । वर्णमाला परिचय पाकर ही शंकरदेव ने आकार इकार आदि रहित केवल वर्ण जोड़कर कृष्णके रूप और गुण की वर्णना करके एक कविता की रचना की । यथा—

करतल कमल कमलदल नयन ······ ।

यही उनकी प्रथम रचना है । इसमें उनकी काव्य-प्रतिभा और एकेश्वर भजन भाव की व्यापक चमक प्रकाशित होती है ।

महेन्द्र कन्दल के विद्यालय में शंकरदेव ने वेद वेदान्त गीता भागवत पुराण रामायण एवं महाभारत आदि समस्त धर्म-शास्त्रों का अध्ययन किया था।

विद्यालय में अध्ययन समाप्त करने के उपरान्त श्रीशंकरदेवने अपने स्वत् उपलब्ध धार्मिक मतको शास्त्रोक्त समर्थन एवं पोषण देकर पूर्ण एवं सुनिश्चित रूप देकर पहले पहल कुछेक स्थानीय लोगों को शरण करके अपना धर्म दिया। श्री शंकरदेव की ऐश्वरीक प्रतिभा से प्रभावित होकर उनके शिक्षा गुरु महेन्द्र कन्दली ने श्रीशंकरदेव को भगवान का अवतार मानकर उनको अपना धर्मगुरु स्वीकार किया और उनसे धर्म ग्रहण किया।

१९ वर्ष की अवस्था में श्रीशंकरदेव ने पठनीय शिक्षा समाप्त कर चित्रपट अंकन करके उसकी पृष्ठभूमि में चिह्नयात्रा का रंगमंच पर अभिनय किया। विश्व में सर्वप्रथम श्री शंकरदेव ने ही चित्रपट की पृष्ठभूमि में इस प्रकार की अभिनय करने की कला को प्रस्तुत किया।

कुछ दिनों के बाद श्री शंकरदेव ने अपने मतवाद तथा धर्म के प्रचार के लिए सम्पूर्ण भारतवर्ष के विभिन्न भागों की यात्रा प्रारम्भ की। उनसे साक्षात्कार होने पर अनेक ब्राह्मण पण्डितों एवं विद्वानों ने उनसे शास्त्रार्थ कर अन्त में उनके मत को शुद्ध कहकर स्वीकार किया और उनका धर्म ग्रहण किया।

श्री शंकरदेव के अन्यतम शिष्य सार्व भौमपति भट्टाचार्य देवजी द्वारा रचित पद्मपुराण के स्वर्ग खण्ड रहस्य के शंकर चरित अध्याय में शंकरदेव द्वारा भ्रमण की हुई जगहों का और उनको

गुरु मानकर धर्म ग्रहण करनेवाले ब्राह्मणों, विद्वानों और अन्यान्य लोगों के नामों का उल्लेख है ।

श्रीशंकरदेव की ईश्वरीय एवं दिव्यशक्ति तथा प्रभाव के परिलक्षित होने पर उस समय समस्त भारतवर्ष में उनको ईश्वर का एक अवतार माना गया तथा शंकरदेवजी ने समस्त जगत-वासियों के लिए एक सहज योग्य एवं सुगम पथ का प्रवर्तन किया । इसलिये उनको जगतगुरु की आख्या प्रदान की गई ।

इसके अतिरिक्त श्रीशंकरदेव एक महान एवं अप्रतिम गायक, वादक, नर्तक, अभिनेता, कवि, नाटककार तथा कलाकार भी थे। उन्होंने अपने अंकीया नाट में गद्य साहित्य की रचना की । वह भारतवर्ष की कथित भाषाओं में सर्व प्रथम गद्य साहित्य है ।

शंकरदेव ने असमीया भाषा में कीर्तन, भक्तिप्रदीप मूल भागवत के पदानुवाद हरिश्चन्द्र उपाख्यान रुक्मणी हरण आदि बहुत से धर्म ग्रन्थों के प्रणयण किया । उनकी ये रचनाए असमीया भाषा साहित्य के सिरताज स्वरूप हैं ।

असम के पहाड़ी तथा मैदानी क्षेत्रों में रहनेवाली जन-जातियों जैसे गारो कछारी, नगा, मीरी, आहोम, भोट आदि यवन, मुसलमान, ब्राह्मण, कायस्थ आदि सभी पुरुषों स्त्रियों तथा अन्त्यज को समान रूप से अपने धर्म में शरण देकर श्रीशंकरदेव ने जातिगत ऊँच नीच स्पृश्य अस्पृश्य भाव रहित एक महान समभाव से युक्त समन्वित भक्त समाज का निर्माण किया

विश्व के अन्यान्य एकेश्वर उपासक तथा समन्वयकारी महा-

पुरुषों के साथ धर्म व्यवसायी लोगों ने जिस प्रकार अत्याचार किया था, शंकरदेव के साथ भी उसी प्रकार के नाना प्रकार के अत्याचार किये गये थे। किन्तु वे सब उनको उनके शुद्ध मतबाद से तनिक भी विचलित न कर सके।

तत्कालीन कूचविहार के राजा महाराज नरनारायण श्रीशंकरदेव की ईश्वरीय तथा दिव्य प्रतिभा से मुग्ध हुए और उन्होंने श्रीशंकरदेव को अपना गुरु माना और उनके धर्म में दीक्षित होने की अपनी उत्कट अभिलाषा प्रकट की। किन्तु शंकरदेव ने यह सोचकर कि राजा के लिए प्रजा की भावनाओं को ध्यान में रखकर राज्य करते समय एकशरणीया धर्म की रक्षा करना कठिन होगा तथा राजप्रभाव के कारण शंकरदेव का धर्म राजधर्म हो जाएगा और राजधर्म होने से राजप्रभाव में उसकी शुद्धता नष्ट हो सकती है। इसी कारण श्रीशंकरदेव राजा को भक्ति धर्म में दीक्षा देने को सहमत नहीं हुए और राजप्रभाव से मुक्त रह कर अपनी शिष्य एवं भक्त परम्परा स्वाधीन रूप से निर्वाह कर पाये। ऐसा सोचकर ही आप सभी को केन्द्रित करके भक्त समाज चलाने की व्यवस्था कर गये।

महाप्रभु शंकरदेव विवाहित थे। ११९ वर्ष की अवस्था में १४९० शकाब्द तदनुसार १५६८ ईसवी भाद्रपद में वे वैकुण्ठ सिधारे।

इस प्रकाशकीय निवेदन को हिन्दी में रूपान्तरित करने में प्राग्ज्योतिष कालेज के अध्यापक श्रीइन्द्रदेव सिंह और श्री मधु ओझा

ने जो सहायता की है, उसके लिये प्रकाशक उनके प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

इन प्रकाशन कार्य में अनेक प्रकार की सहायता करने हेतु हम लोग श्री प्रेमकान्त महन्त एस०डी०पी०ओ० महोदय के प्रति चिर-कृतज्ञ हैं।

धन्यवाद ज्ञापन—

बरपेटा रोड के राजस्थानी युवक संघने इस प्रकाशन से सम्बद्ध व्यय का दायित्व ग्रहण किया है, उसके लिये वे हमारे आन्तरिक धन्यवाद के पात्र हैं।

निवेदक—

श्री गिरिकान्त देव अधिकारी, साधारण सम्पादक
श्रीमंत शंकर धर्म कृष्टि केन्द्रीय परिषद
प्रधान कार्यालय—गुवाहाटी, असम

SREE SHANKAR DEV & HIS BORGITS.

If the 'Bihu Git' is the supple and rhythmic body of the music of Assam, verily the 'Borgit' is the soul of it. While the former depicts the youthful and exuberant aspect of the vigour and abundance of life and vitality of the Assamese people, the latter signifies the natural, steady, dignified and sombre thought of the people of Assam. 'Bihu Git' is purely a folk music whereas the Borgit is a 'Raga' or systematised music.

Borgits are the crystallised thought blended into rapturous melodic outpourings of the Bhakti cult of Assam epitomizing the "Eka sharana— Dashy Bhaba" doctrine of a devotee to its 'Supreme Being' through the "Bhakti-marga."

The cardinal principles of the sect being 'Eka Deva Eka Seva— Eka bine Nahi Kewa' i. e. One God, one Salutation, there is none but One.

The composers of these Borgits are the philosopher, saint, poet and musician Sree Sree Shankar

Dev of Assam, who was born in the year 1449 A. D. and died in the year 1568, a span of life exceeding a century by nineteen years, and his worthy disciple Sree Sree Madhav Deva, a dedicated soul for the cause of his Guru.

Shankardev combined religion with arts, literature, mass education and social service and reorganisation for the people of Assam.

For this end in view he laid more stress on the cult of Gita's "Eka Sharana Dharma with Dashya Bhaba." He had also his adherents and disciples in Brindaban and other places throughout India like Rup Sanatan, Brindaban Das, and Radha Sanyasi.

Sree Shankar Dev himself composed two hundred forty Borgits but unfortunately most of them were lost and burnt in a ravaging fire in the house of one Kamal Bayan. Sree Shankardev then at the age of more than ninety years took it to heart and advised his most beloved disciple Sree Madhabdev to compose some Borgits. Sree Madhabdev altogether composed one hundred ninety one Borgits to satisfy his Guru.

These Borgits form a part of the daily prayers sung in the 'Nam-ghars' or 'Kriton-ghars' as they are so called. These are mostly situated in the 'Satras'

i. e. the religious institutions of the people of Assam. Compositions of these Borgits were rendered in the older form of the Assamese language interspersed with Brajabuli dialects, a lingua franca of the then Vaisnavite saints of India. Even Arabic words and Persian words were occasionally used in these Borgits.

This generous, unorthodox and liberal view was adopted to suit the circumstances of the time; for Assam was itself subdivided into different smaller states with multi-racial conflicts of the time and was separated from the rest of India as an independent kingdom, while the rest of the country was under the suzerainty of the Mahommedan rulers.

It was for this reason that inspite of the strongest opposition and great many hardships and hurdles put against him, he went against the spirit of the time and discarded the race-superiority conscious theory in matters of religion and devotion to God. It was he, who for the first time dreamt and envisaged the image of a glorious Greater Assam through a unique pattern of socio-religious movement that found expression through its solemn and serene art and culture. He tried by this method to bring unity and co-operation among all the diverse & divisive

forces working against one another and that was why he choose amongst his disciples men from Brahmins, Mahommedans, Barbars, Nagas, Garoes etc.

It is therefore no wonder that the Borgits convey an universal expression and idea of the unrestricted and unfettered out-pourings of the rapturous and sublime melody of a sedate soul. The philosophical thought and idea of the Gits are clearly perceptible, visible and understood from the compositions of the Gits but its spirit of impression and expression will have to be realised from the structural blendings of the melody and the rhythm in the form of the Raga and the Tala used in the Gits.

Generally the Songs of the Namghars or Kirtonghars of Assam are known as Gits. They are of two types, tha Borgits and the Ankia Gits. Ankia Gits are meant for the Ankas i. e. the dramas and the Borgits are exclusively used for the purpose of prayers only.

However there is a lot of misunderstanding and misconception abont the term Borgit. I think it was used to mean a superior class of Git.

The prefix 'Bor" before a noun in Assamese

language means Big or great and as such we get so many Assamese words with the prefix 'Bor' added to them to mean the excellence of a thing e. g. Bor-Jhapi, Bor-Kah, Bor-Nam, Bor-Kapor, Bor-Dhol etc. to mean the special and superior quality of the things before which the prefix is used.

It is therefore that for the high philosophical thought and aesthetic beauty that are inherent in these Gits coupled with a richer and higher order of music contained in it that made them distinguished from other Gits and thus were they called the Borgits.

The history of Indian Music tells us that many forms of music lost their own identity and existence in the course of time even before the system of Raga music came into vogue. Even some forms of Raga Music like the "Prabandhas" too lost their original form and structure owing to perhaps misuse, disuse and for the antipathy shown in course of time. Unfortunately for want of some basic and scientific data needed for a research work it has become wellnigh impossible for the scholars to trace out the original form of the Prabandha music.

If we survey the present field of Indian Music both of the North and the South, we find Dhrupads and the Kheyals to be the oldest extant music in the North and the Kirtons and the Krittis of the south to be the same.

It is a fact very difficult for us to know at present how to trace their source, link or connections if any, with the obsolete forms of Indian music mentioned in the treatises of music.

In the background of the things mentioned above, the case of Borgit stands at a very interesting point and pose before us some of the following few important questions :—

1. Are these Gits a kind of some folk music as was and is suggested by some contenders ?

2. Is it a form of music like that of the Dhrupads of the North or the Kirtons and the Krittis of the South ?

3. Has this Music a sort of link or connection with the obsolete types of music mentioned in the Sangit Granthas ?

4. Is it a system of some distinctive music developed particularly in Assam ?

If we critically go through and examine the above points we find in answer to the first question the point that any student of music will term it as developed and systematised music since the Gits carry with them the Raga and the Tala name in which they are to be sung. They also follow a system under which they are to be executed.

In answer to the second question it can safely be presumed, preferred and concluded that these Gits have no connections with that of the Dhrupads of the North. For not only the style of

composition of both the types of songs differ from each other even the Tala system and the method of executing the songs and illustrations of the Ragas totally differ from each other.

Regarding the Kirtons and the Krittis of the South though we find some points of similarity on the point of the subject matter of the songs i. e. the compositions yet the Raga illustration, Tala variation and styles of Gita execution do vary from each other.

The Gits however point to some older form of Indian Music in comparision with that of the Dhrupads, Kirtons and Krittis mentioned above.

The most important and at the same time thought provoking points are met with in answer to the question number three.

Really this point is a matter of deep study and further research before we come to a definite conclusion to show whether these Gits do conform to some form of obsolete Indian Music discussed above.

From the various internal and external evidences found in covering these Gits I am very much swayed and dragged towards the idea that these Gits are more likely to conform to some sort of 'Prabandha' type of songs mentioned in the Sangit Granthas.

In one of my articles 'The Music of Assam'

published in the Journal of Madras Music Academy, Madras in 1950, I put forth my view points through a detailed discussion in favour of the points mentioned above.

It is my belief that a proper assesment, study and research on these Gits will surely throw some light and bring interesting results in the history of Indian Music as a whole and particularly to the music of Assam, as the place happens to be a repository of unsullied, unsophisticated and unspoilt virgin soil for research workers on this and other subjects.

Regarding my opinion on the point of the last question I am constrained to think and remark that art and culture all over India as a whole has a basis of unity and purpose amidst diversity.

As Sanskrit happens to be the mother of all the regional languages of India, similarly the Raga Music is the perennial source of melody and tonal structure of all the systematised music of India with a minor local differences here and there and that need not make us blind to the extensive and all pervasive nature of art and culture all over India.

Khagendra Nath Das.
Barpeta.

15. 6. 68.

महापुरुष शङ्करदेव रचित

= बड़गीत =

गीत राग– भाथ्गोवारी [ताल परि]

जय जय यादव जलनिधिजा॰धव धाता !
श्रुतमातलाखिल ताता ।
स्मरणे करय सिद्धि दीन दयानिधि
भकत मुकुति पद दाता ॥ध्रुं॥

पद

जगज्जन जीवन अजन जनार्द्दन
दनुज दमन दुःखहारी ।
महदानन्द कन्द परमानन्द
नन्द नन्दन बनचारी ॥
बिबिध बिहार बिशारद शारद
इन्दुनिन्दि परकाशी ।
शेष शयन शिव केशी विनाशन
पीतबसन अविनाशी ॥

जगत वन्धु विधु माधव मधुरिपु
मधुर मुरुति मुरनाशी ।
केशव चरण सरोरुह किङ्कर
शङ्कर एहु अभिलाषी ॥१॥

गीत राग – नाट मल्लार [ताल परि]

मधुर मुरुति मुरारु मन देखो हृदये हामारु
रूपे अनङ्ग सङ्ग तुलना तनु
कोटि सुरुय उजियारु ॥ध्रुं ॥

पद

मकर कुण्डल गण्ड मण्डित खण्डित
चान्द रुचि सितहासा ।
कनक किरीट जड़ित रतना नव
निरज नयन बिकाशा ॥
चतुर उज्वर कर कङ्कण केयुर
भूज मह मोतिम हारु ।
लीला विनोदी कम्बु कौमुदी
चक्र केरि कञ्ज धारु ॥
श्याम शरीर रञ्जित पीत अम्बर
उरे बनमाला लोले ।

कौस्तुभ शोभित कण्ठ करि काञ्चि
किङ्किणी कनबा दोले ॥
अरविन्द निन्दि पाव नव पल्लव
रतन नूपुर परकाशा ।
भकत परम धन ताहे मझोक मन
शङ्कर एहु अभिलाषा ॥२॥

गीत राग – आशोवारी [ताल परि]

शुन शुन रे सुर बैरी प्रमाणा
निशाचर नाश निदाना ।
राम नाम यम समरक साजि
समदले कयलि पयाणा ॥ध्रुं॥

पद

ठाट प्रकट पटु कोटि कोटि कपि
गिरि गड़ गड़ पद घावे ।
वारिधि तरि तरि करे गुरुतर गिरि
धरि धरि समरक धावे ॥
हाट घाट बहु बाट बियापि
चौगड़ बेढ़लि लङ्का ।
गुरु घन घन घोष घरिषण गर्जन
श्रवणे जनमय शङ्का ॥

मह = बीच में । काञ्चि = कचना कर

धीर बीर शूर शेखर राघव
रावण तुवा परि झाम्पे ।
सुर नर किन्नर फणधर थर थर
महीधर तरसि प्रकाम्पे ॥
अन्ध मुगुध दशकन्ध पाप बुध
जानकी शिरत चराइ ।
रघुपति पदबर धर रजनीचर
शङ्कर कहतु उपाइ ॥३॥

गीत राग—धनश्री [ताल परि]

नारायण ! काहे भकति करो तेरा ।
मेरि पामरु मन माधव घने घन
घातुक पाप नाछोरा ॥ ध्रुं ॥

पद

यत जीव जङ्गम कीट पतङ्गम
अग नग जग तेरि काया ।
सवकहु मारि पूरत ओहि उदर
नाहि करतु भूत दाया ॥
ईश स्वरूपे हरि सबघटे बैठह
यैचन गगण बियापि ।

निन्दा बाद पैशुन्य हिंसा हरि
तेरि करहु हामु पापी ॥
काकु शङ्कर कय कर करुणा नाथ
योनो छारहु राम बाणी ।
सव अपराधक बाधक तुवा नाम
ताहे शरण लेहो जानि ॥ ४ ॥

गीत राग--धनश्री [ताल परि]

नारायण ! चरणे करोहो गोहारि ।
बिषय बिलास पाश छान्दि इन्द्रिये
मोहि ओहि लुटे बाटोवारी ॥ ध्रुं ॥

पद

नासा गन्ध मधुर रस रसना
श्रवण बिबिध ध्वनि धाय ।
नयणा रूप परश त्वच चाहे
काँहे भजोहोँ पहु पाय ॥

काकु = विनति । पहु = प्रभु

काम क्रोध मद मान मोह मेरि
पैसब बैरी बिशाल ।
शङ्कर कह पहु तुहु बिने नाहि आर
सेवक पाल गोपाल ॥५॥

गीत राग--धनश्री [ताल परि]

शारङ्गपाणि पाहे पामर मति हामि ।
निरय निबार आघरि नाहि हेरहोँ
बिने चरण तयु स्वामी ॥ ध्रुं ॥

पद

जरा मरण मेरि निकटहि आया
काया पर केति बेरि ।
करतहुँ पाप समापल आवि
भावि चरण ना तेरि ॥
देखहु क्षीण दिन दिन देहा
आधि व्याधि बिघात ।
अन्तकाले गति मेरि कमलापति
शङ्कर कर प्रणिपात ॥३॥

पहु = प्रभु । पाहे = उद्धार कर ।

गीत राग— धनश्री [ताल परि]

नारायण ! लीला जानब कोइ ।
सनक सनातन चिन्ति चतुरमुह
अधिकहि बिमोहित होइ ॥ध्रुं॥

पद

कोटि कोटि भण्ड आवत यावत
रोम रन्ध्र मह यार ।
सोहि भूमि भार हरसि सुर शूकर
नरसिंह अवतार ॥
यत देखु काया सुत वित्त जाया
मायाको सब धन्ध ।
हामो यत जीव शिव तेरि अंशा
काहे ओहि मोह बन्ध ॥
शङ्कर कह पहु पयरहि लागो
मागो नाहि आन कामा ।
ओहि कृपा करु रूप हृदये रहु
रहु मुख भरि तेरि नामा ॥७॥

गीत राग – धनश्री [ताल परि]

बोलहु राम नामेसे मुकुति निदाना ।
भव बैतरणी तरणी सुख सरणी
नाहि नाहि नाम समाना ॥ध्रुं ॥

पद

नाम पञ्चानन नादे पलावत
पाप दन्ती भयभीत ।
बोलिते एक शुनिते शत नितरे
नाम धरम बिपरीत ॥
वचने बुलि राम धरम अरथ काम
मुकुति-सुख सुखे पाय ।
सवकहु परम सुहृद हरि नाम
छुटे अन्तकेरि दाय ॥
नारद शुकमुनि राम नाम बिनि
नाहि कहल गति आर ।
कृष्ण किङ्कर कय छोड़ मायामय
राम परम तत्त्व सार ॥ ८ ॥

दन्तो = हाथी । नितरे = निस्तरे ।

गीत राग – गौरी (ताल बिषम)

नाहि नाहि रमया बिने ताप तारक कोइ ।
परमानन्द पद मकरन्द सेवहु मन मोइ ॥ध्रुं॥

पद

तीरिथ बरत तप जप याग योग युगुति ।
मन्त्र परम धरम करम करत नाहि मुकुति ॥
मातु पितु पतनी तनय जनय सब मरणा ।
छारहु धन्ध मानस अन्ध धरतु हरि चरणा ॥
कृष्ण किङ्कर शङ्कर कह बिछुरि बिषय कामा ।
राम चरण लेहु शरण जप गोबिन्दक नामा ॥६॥

गीत राग— गौरी (ताल बिषम)

सोइ सोइ ठाकुर मोइ यो हरि परकाशा ।
नाम स्मरत रूप धरत ताकेरि हामु दासा ॥ध्रुं॥

पद

पण्डिते पढ़े शास्त्र मात्र सार भकते लिये ।
अन्तर जल छुतय कमल मधु मधुकर पिये ॥
याहे भकति ताहे मुकुति भकते ए तत्त्व जाना ।
यैछे बणिक चिन्तामणिक जानि गुण बखाना ॥

मोइ = मेरा । सोइ = वही ।

कृष्ण किङ्कर शङ्कर कह भज गविन्दक पाय ।
सोहि पण्डित सोहि मण्डित यो हरि गुण गाय ॥१०॥

गीत राग— गौरी [ताल ज्योति]

कमल नयन चिन्त चित्त चेतन लाइ ।
बिने हरि भकति मुकुति कति पाइ ॥ध्रुं॥

पद

नर भयो भाइ भारते कतिभागा ।
नकहसि राम मरस कति लागा ॥
छोरि राम नाम अमिया उपयोगा ।
यैछे पुरीष शूकर कयो भोगा ॥
अथिर जीवन धन यौवन जाया ।
भकति विरोधी विषय सब माया ॥
कृष्ण किङ्कर ओहि शङ्कर भाणा ।
बिने हरि भकति तरणी नाहि आना ॥११॥

गीत राग— गौरी [ताल बिषम]

कमने रमया मन बिछुरि रहु बृथा मोहे भुलाय ।
राम चरण चिन्त चित्त मृत्यु तरण उपाय ॥ध्रुं॥

कति = कत, कितना ।

पद

साफल जीवन थो जन्तु नित्य जलपतु रामा ।
केशव नासेवि यो जीवय बिट कीट उपामा ॥
याकेरि चाकरी करतहु गति पातकी पाय ।
शङ्कर कह सोहि हरिको भकति कति नाकाय ॥१२॥

गीत राग– धनश्री [ताल परि]

ओझा सोजा पन्थ नाहेरि ।
कोटि करम काय हरिको नाहि पाय
परल भव बेरि बेरि ॥ध्रुं॥

पद

जप तप तिरिथ करसि गया काशी बसि बयस गोवाइ ।
जानि योग युगुति मति मोहित बिने भकति गति नाइ ॥
राम नाम मह निखिल पुण्य रह ओहि निगम तत्त्व बाणी ।
कलिको परम धरम हरि नाम पढ़ि पुनु मरम नाजानि ॥
कृष्ण किङ्कर कह क्षणिक देहा रह नरतनु पुनुहु नापाइ ।
करम गरब सब दूर करि हरि चरण चिन्त चित्त लाइ ॥१३॥

बिट = मैला । कति = क्यों ।
काय = करके । बसि = बैठके । मह = में ।

गीत राग – सुहाइ [ताल ज्योति]

श्रीराम मइ अति पापी पामर
तेरि भावना नाइ ।
जनम चिन्तामणि काहे गयो
यच काचकु लाइ ॥ध्रुं॥

पद

दिवसे बिषय बियाकुल निशि शयने गोवाइ ।
मने धन खोजि बिमोहित तेरि आरति नापाइ ॥
हृदय कमले हरि बैटह चिन्तो चरण ना तेरि ।
करल गरल यैचे भोजन हामो अमिया हेरि ॥
परम मुरुख हामो माधव एको भकति नजाना ।
दास दास बुलि तारहु एहु शङ्कर भाणा ॥१४।

गीत राग-- बसन्त (ताल परि)

कैछे नरहरि तरण उपाइ ।
नाश सकल कैलोँ बिषय लोभाइ ।।ध्रुं।।

पद

अथिर जीवन धन यौबन देह ।
सुहृद सोदर सुत किछु नोहे केह ।।

शख = शक्त । गरुवा = गरवा ।

পেখিতে অমিয়া রস বিষ পরিণাম ।
তথিয়ে মজাইলোঁ মন মেরি রাম ॥
নিরমিল বিষ বিস্তু কামিনী লোহ ।
তাসু পরল মেরি পমন মোহ ॥
তাকর ছোৰাইতে শখ নাহি থিক ।
গৰুৱা মনোৰথ বাঢ়লি ধিক ॥
জনমে জনমে হামো দাসকু দাস ।
কেশৱ অবহু ছোৰহু মোহ পাশ ॥
শমনক লাই জীৱ বড় ডোৰ ।
শঙ্কৰ কহ হৰি সেৱক তোৰ ॥১৫॥

গীত ৰাগ— শ্ৰী (একতালি)

গোপাল কি গতি কৈলে গোবিন্দ কি মতি দিলে
নাথ বিফলে বয়স সব গেলৰে ॥ধ্ৰুং॥

পদ

এ ভৱ গহন বন আতি মোহ পাশে ছন্ন
তাহে হামো হৰিণ বেৰায় ।
ফান্দিলো মায়াৰ পাশে কাল ব্যাধে ধায়া আসে
কাম ক্ৰোধ কুত্তা খেদি খায় ॥

ডোৰ = ডৰ ।

हराइल चेतन हरि नजानो किमते तरि
गुणिते दगध भैल जीव ।
लोभ मोह दुहों बाघ सतते नछारे लाग
राखु राखु सदाशिव ॥
पलाइते नेदेखों सन्धि दिने दिने दृढ़ बन्दी
भैलो मन्द मनर युगुति ।
तुवा हरि लागो गोड़ मोर माया पाश छोड़
शङ्कर करय काकुति ॥१६॥

गीत राग— केदार

पावे परि हरि करहों कातरि
प्राण राखबि मोर ।
बिषय बिषधर बिषे जड़जड़
जीवन नारहे थोर ॥ध्रुं॥

पद

अथिर धन जन जीवन यौवन
अथिर एहु संसार ।
पुत्र परिवार सबहि असार
करबो काहेरि सार ॥
कमल दल जल चित्त चञ्चल
थिर नहे तिल एक ।

नाहि भयो भव भोगे हरि हरि
परम पद परतेक ॥
कहतु शङ्कर ए दुःख सागर
पार करु हृषीकेश ।
तुहु गति मति देहु श्री-पति
तत्त्व पन्थ उपदेश ॥१७॥

गीत राग— धनश्री (ताल परि)

मन मेरि राम चरणहि लागु ।
तइ देखना अन्तक आगु ॥ध्रुं॥

पद

मन आयु क्षणे क्षणे टूटे ।
देख प्राण कोन दिन छुटे ॥
मन काल अजगरे गिले ।
जान तिलेके मरण मिले ॥
मन निश्चय पतन काया ।
तइ राम भज तेजि माया ।
रे मन इसब बिषय धान्धा ।
केने देखि ने देखस आन्धा ॥

परतेक = प्रत्यक्ष ।

मन सुखे पार कैचे निन्द ।
तइ चेतिया चिन्त गोविन्द ॥
मन जानिया शङ्करे कहे ।
देख राम बिने गति नहे ॥१८॥

गीत राग-- धनश्री [ताल परि]

पामरु मन राम चरणे चित्त देहु ।
अथिर जीवन राम माधव केरि नाम
मरणक सम्बल लेहु ॥ध्रुं॥

पद

रयनी दिवसे दूर आवि यावत
आवत अन्तक गरजि ।
कथि तनु पात मिलत मति मानि
राम भजहु सब बरजि ॥
आशा पाश परशि मानस पशु
पड़लि बन्दी बेरि बेरि ।
भव कारागार तारक नाहि आर
बिने भकति रति तेरि ॥

आवि = आयु

अवनिशि सेवहु राम परम पहु
रहु हृदि पङ्कज मेरा ।
कृष्ण किङ्कर भान राम परम धन
मरणहि सङ्ग नाछोरा ॥१६॥

गीत राग— गौरी (ताल बिषम)

ओरे सखि पेखरे कञ्ज लोचन
चललि नन्द कुमारा ।
इन्दु बदन कोटी मदन
रुपे तुल नुहि यारा ॥ध्रुं॥

पद

मकर कुण्डल मण्डित गण्ड
गले गजमति लुले ।
तड़िताम्बर श्याम सुन्दर
शिरे शिखण्डक डोले ॥
कर कङ्कण किङ्किणी कनक
झनके चले गोपाला ।
पञ्चम पूरे लम्बित उरे
केलि कदम्बक माला ॥

पद पङ्कज मञ्जीर झुरे
हरय चित्त हामारु ।
शङ्कर कह छाड़ बिरह
ओहि जग आधारु ॥२०॥

गीत राग – माउर धनश्री [ताल परि]

गोपिनी प्राण काहेनु गयो रे गोविन्द ।
हामु पापिनी पुनु पेखबोँ नाहि आर
सोहि बदन अरविन्द ॥ध्रुं॥

पद

कमन भाग्यवता भयोरे सुपरभात
आजु भेटब मुख चान्दा ।
उगत सूर दूर गयो गोविन्द
भयो गोप पुर आन्धा ॥
आजो मथुरा पुरे मिलब महोत्सव
माधब साधव मान ।
गोकुलक मङ्गल दूर गयो नाहि
बाजत बेणु बिषाण ॥
आजु यत नागरी करत नयन भरि
मुख पङ्कज मधुपाना ।

हामारि बङ्क बिधि हाते हरल निधि
कृष्ण किङ्करे रस भाणा ॥२१।

गीत राग -- धनश्री (ताल परि)

हेरहु माइ चलिलि विपिने मधाइ ।
बेणु बिषान निशाने आवत
हरषे हरषे धेनु धाय ॥ध्रुं॥

पद

ओहि जग मोदन कन्धे दधि ओदन
गोधन आगु बुलाइ ।
बङ्किम नयन सरोरुह हासि
हेराइते भुवन भुलाइ ॥
मदन दमन रूप पेखिये पुनु पुनु
मुरुछि परय सुर नारी ।
सोहि जग जीव बियोग अब सहबि
कैचन चित्त हामारि ॥
हरि बिरहानल आकुला गोपिनी
दरशन दिवसे नपाब ।
हरिगुण कहि रहि प्रेमे झुरय नीर
शङ्कर पहु रस गाइ ।।२२।

गीत राग– धनश्री [ताल परि]

देखु सखि! मधुर मुरुति हरि ।
धरि अधरे पूरे मुररी ॥ध्रं॥

पद

तनु अभिनव घन काला ।
उरे लुले कदम्बक माला ॥
पीत अम्बर तड़ित ज्योति ।
जले कम्बु गले गजमति ॥
मणि कौस्तुभ कन्थत लुले ।
चारु शिरे शिखण्डक डुले ॥
नील अलक लोल कपोल ।
कर्णत मकर कुण्डल डोल ॥
भुज कङ्कण रञ्जे केयुरे ।
कटित कनक किङ्किणी झुड़े ॥
पद पङ्कज मञ्जीर रोले ।
कृष्णर किङ्कर शङ्कर बोले ॥२३॥

गीत राग— आशोवारी [ताल परि]

आनन्दे गोबिन्दे बाय बृन्दाबने बेणु ।
रूपे भुवन भुले रहिया कदम्ब मूले
कालिन्दी तीरे राखे धेनु ॥ध्रुं॥

पद

गोपशिशु सङ्गे चले शिरे शिखण्डक डोले
कर्णे कुण्डल गण्ड लोले ।
केयूर कङ्कण करे उरे बनमाला लुले
मधुर मधुप मधु भोले ॥
कटि काञ्ची किङ्किणी बाजत झणि झणि
श्याम तनु शोभे पीत-बासे ।
बाम-काखे सिङ्गा बेत अरुण पङ्कज नेत्र
कन्ठे कौस्तुभ परकाशे ॥
त्रिभङ्ग ललित हास करु हरि भ्रूव भास
दरशिया लीला बिलासे ।
चरणे मञ्जीर झूरे उच्चाया पञ्चम पूरे
शङ्कर पहु अभिलाषे ॥२४॥

गीत राग— आशोवारी (ताल परि)

बालक गोपाले करतरे केलि ।
उच्छाया पाञ्चनी नाचे हासे गोप मेलि ॥ध्रुं॥

पद

नील तनु पीत पट धटि लटि लोर ।
नव घन घन यँचे बिजुली उझोर ॥
शिरे शिखण्डक डोले गले गजमति ।
कोटि मदन मन मोहन मुरुति ॥
चरणे मञ्जीर झूरे उरे हेमहार ।
शङ्कर कह ओहि हरिक बिहार ॥२५॥

गीत राग— श्री (ताल एकतालि)

उद्धव चलहु गोकुल लाइ ।
हामो विने गोपीर तिलेके यूग याइ ॥ध्रुं॥

पद

हामु चित्त बिस नित्य हामाको धियाना ।
धरल बियोगे गोपी कथमपि प्राणा ॥

मेलि = मिलकर । धटि = धोती ।
लटि = लहरता हुआ । लोर = मुठ ।

हामाकेसे आशे गोपी जीये समुदाइ ।
बाहुरि आवब कृष्ण भेटबो दुनाइ ॥
कह कृष्ण किङ्कर हरिक भज लोइ ।
हरि बिने सुहृद बान्धव नाहि कोइ ॥२६॥

गीत राग— तुर बसन्त (ताल ज्योति)

कहरे उद्धव कह प्राणेर बान्धव
हे प्राण कृष्ण कवे आवे ।
पुछये गोपी प्रेम आकुल भावे
नाहि चेतन गावे ॥ध्रुं॥

पद

बाछुरि ध्वनि शुनि गोबत्स पेखि ।
लागे आगि गावे उद्धव सखि ॥
कालिन्दी पेखि सखि ! फुटय बुक ।
एथाइये खेलाइछिलो से चान्द मुख ।
हरिल नयन सुख ॥
बिरिन्दाबन बैरी हामारि भेलि ।
पेखिते ना बिछुरो गोपाल केलि ।
ध्वज बज्र यव पङ्कज चाय ।

तथाये कान्दी हामो लोटाया काय ।
गुण गोविन्द गाय ॥
कृष्ण सूर्य्य बिने ब्रज आन्धार ।
नेदेखो एदुःख अवधि पार ॥
आर कि पेखबी गोपाल प्राण ।
कृष्ण किङ्कर शङ्कर भाण हरिक हृदये जान ॥२७॥

गीत राग— कल्यान [ताल ज्योति]

उद्धव बन्धु मधुपुरी रहल मुरारु ।
काहे नाहेरि रहब अव जीवन
बन भयो भवन हामारु ॥ध्रुं॥

पद

याहे बियोग आगि अङ्ग तावय
तिल एकु रहये नापारि ।
सोहि ब्रज सुर दूर गयो गोविन्द
दिश दश दिबसे आन्धारि ॥
भयो मरण ओहि सोहि हरि चरणकु
बिछुरि रहये नापाइ ।
देखत कालिन्दी गिरि बिरिन्दाबन
तनु मन दहये सदाइ ॥

ब्रज जन जीवन बाहुरि नाहि आवत
हामाकु करत अनाथा ।
गोपिनी प्रेम परशि नीर झुरय
शंकर कह गुण गाथा ॥२८॥

गीत राग— धनश्री (ताल परि)

राम मेरि हृदय पंकजे रैछे ।
भाइ चिन्तना चित्ते कैछे ॥ध्रुं॥

पद

जग तारक याकेरि नाम ।
देखो सो पुनु आपुन ठाम ॥
राम सुहृद सोदर माता ।
जान रामेसे अभय दाता ॥
राम भकत परम निधि ।
राम बिने नाहि एको सिद्धि ॥
राम इह परलोके गति ।
ताइ देखो नाहि मन्दमति ॥

कृष्ण किंकर शंकर भाण ।
राम बिने गति नाहि आन ॥२९॥

गीत राग-- धनश्री (एकताली)

हरिक बयन हेरि माइ ।
फोकारय श्वास मीर नयन जुराइ ॥ध्रुं॥

पद

आजु जनमि सुत चल परदेश ।
कतमो लिखिल बिहि अभागीक क्लेश ॥
बिने तुहों रहब जीवन नाहि मोइ ।
कह शंकर कृष्ण बोल सब लोइ ॥३०॥

बिहि = बिधि ।

महापुरुष श्रीश्री माधव देव रचित

बड़गीत

गीत राग— आशोवारी [ताल परि]

रे मन ! सेवहु हरिकहु चरणा ।
निकटे देखहु निज मरणा ।
देखत हरिकहु चरणे शरण विने
नाहि नाहि भव भय तरणा ।ध्रुं ॥

पद

चारि वेद पुराण यत भारत
गीता भागवत चाइ ।
ओहि सार विचार कय भाषत
हरि विने तारक नाइ ॥
सनक सनातन शुक मुनि नारद
चतुर वयन शूलपाणि ।
सहस्र वयन आदि गावत हरिगुण
सकल निगम तत्त्व जानि ॥
कृष्ण नाम यश परम अमिया रस
गावत मुकुत निशेषं ।
परम मुरुख मति कहय माधव दीन
शङ्कर गुरू उपदेशं ॥१॥

गीत राग— आशोवारी [ताल परि]

मञी सेवहो राम चरण दुजा ।
काहे करहो हामो आवर पूजा ॥ ध्रुं ॥

पद

घटे घटे राम बियापक होइ ।
आतमा राम बिने नाहि कोइ ॥
चैतन्य छोरि काहे जड़ सेवा ।
राम बिने नाहि आवर देवा ॥
कहय माधव शुनह नर लोइ ।
राम बिने कति मुकुति नाहोइ ॥२॥

गीत राग— धनश्री [ताल परि]

नारायण माया जानब कोइ ।
सुरपति चतुर बयन मुनि शङ्कर
चिन्तिते आकुल होइ ॥ ध्रुं ॥

पद

अघट घटन पटु चातुरी यो नित
अनित समान सब होइ ।

लोइ = लोग । कति = कभी ।

यतये अनित नित सम भासत
अैचन चातुरी हरि तोइ ॥
कोइ कोइ सच्चा कोइ कोइ मिछा
कबहु नियत नाहि जानि ।
सच्चा मिछा समान कय मानत
मोह करत वेद वाणी ॥
सच्चा मिछा किछुवे नाहि जानत
मुरुख पामर मति हीना ।
याहा याहा गति मति तुहुँ कमलापति
कहतु माधव दास दीना ॥ ३ ॥

गीत राग — माहुर [ताल परि]

हामारु राम चरणे मन लागु ।
मायामय सयल दुनियाइ जानि
भरम तेजि जागु ॥ ध्रुं ॥

पद

धन जन जीवन यौवन जाया
काया अैसव धान्धा ।

सयल = सबही

यौवन बिजुरी
उझुरी मिलावत
ताहे नाहि देखो अन्धा ॥
हरि पद पङ्कज
भव भय भञ्जन
ताहे चिन्त चित्त लाइ ।
हरिकहो चरण
पङ्कज रज किङ्कर
माधव दीन गुण गाइ ॥ ४ ॥

गीत राग— भाटियाली (रुद्र एकताली)

मञि पापी कमने
तरिबोँ हरि ए
तुमि करुणा कर मोरे ।
पाप मति मन
वासना नाछारे
मजिलो संसार घोरे ॥ ध्रुं ॥

पद

नयना कामिनी
रूप नछारय
रसना ए षड़ रस ।
गीत मधुर ध्वनि
श्रवणे नछारे
चरमे सुख परश ॥

बिजुरी - ताड़ित, उझुरी - उजाल ।

सुगन्ध शीतल नासाये नछारे
कनक कामिनी मने।
लोभ मोह काम क्रोध मद मान
नछारे ए सव्वँक्षणे॥
ईरिषा असूया हिंसा पैशुन्य
ना गुछे ए तिले तिले।
तनुक बेढ़ तिले तिले धरि
काल अजगरे गिले॥
भैलोँ अचेतन तोमार चरण
बिने नाहि आन गति।
शीतल चरणे पशिलोँ शरणे
माधव मुरुख मति।५॥

गीत राग— भाटियाली (रच्छ एकताली)

मोरे पतित पावन प्रभु हरि हेरोरे बाप
किना गति हइबे हामारे।
दुर्ल्लभ लभिया पुनु भारते मानवी तनु
नाम लेते नपारोँ तोमारे।ध्रु॥

पद

स्थाबर जङ्गम यत कीट पशु पतङ्गत
जनमिलोँ कत नाहि सीमा।
चतुराशी नरकत पाइलो दुख नाना मत
नजानिया तोमार महिमा॥
जानो भैल तुवा दया तातेसे मानवी काया
पाइलो आतो बिड़म्बिल बिधि!
किनो मझि बुद्धि नाशा बिषय काचेर आशा
हातते हराइलो नव निधि॥
किना भैलो बियामोह आचरिलो तुवा द्रोह
इसे मोर पाइल बड़ दुखे।
तुवा भकतर पद रेणु सेवा नाकरिलोँ
तुवा नाम नलइञोँ हो मुखे॥
बयस गोञाइलो हेले तुवा भकतर मेले
तुवा कथा नुशुनिलोँ काणे।
ओहि अपराधे जानो निया मोरे यमराय
बड़ रागे मारिबे पराणे।
गुणिते गुणिते चित्त करिते नपारो थित
किना गति हइबे मरणे।
तुवा भकतर बाणी शुनि मने अनुमानि
तुवा पदे पशिलोँ शरणे।

करा कृपा कृपामय सदाये यिमते रय
तुवा नाम सन्तर सङ्गति।
नाकरियों मोरे नाश भैलोहों दासरो दास
कहय माधव मूढ़मति ॥ ६ ॥

गीत राग— तुर भाटियाली (ताल ज्योति)

ए नाथ ! तारियो तारियो तारियो यदुमणि !
मजिलों ए भव सिन्धु तोमाक नजानि । ध्रु ं ।

पद

ए भव सागर माझे पड़ि हामु भासि।
काम क्रोध कुम्भीर मगरे गिले आसि ॥
शोक मोह भय महापाके तल करे।
तृष्णा तरङ्गे पाया सब श्रुति हरे ॥
चिन्ता नाम बाड़व अगनि शोषे प्राण।
नाहिके तरणी तुवा पद बिने आन।
जानिया तोमार पावे पशिलों शरण।
कहय माधव गति अरुण चरण ॥ ७ ॥

भासि = तेर पर।

गीत राग— तुर भाटियाली (ताल ज्योति)

केमने पाइबो हरि चरण तोरे।
ए दुख सागरे उद्धार मोरे॥ ध्रुं॥

पद

ए भव आटोप अरण्य माझे।
काल ब्याधे मृग मारिते साजे॥
हामु पशु मायाजालत बन्दी।
नाहि नाहि देखोँ पलाइते सन्धि॥
काम क्रोध कूत्ता कामुड़ि खाइ।
बिषय बिष लागि ए जीव याइ॥
रूप रस आदि ए पञ्च बाणे।
हृदय माजे हामु फुटलो टाने॥
पाप पुण्य भेल ए बड़ डोर।
गलार माझे छान्दि बान्धिल मोर॥
काल ब्याधे धरि लै याय टानि।
राखु राखु मोके शारङ्ग पाणि॥

केमने = कैसे, मोके = मुझे।

कालर काल तुमि चाहेब हरि।
नाहि नाहि आर तोमार सरि॥
जानिया शरण लैंलो तोमार पाय।
दीन माधव दासे ए रस गाय॥ ८॥

गीत राग— बसन्त (ताल परि)

गोपीनाथ ! जगजीव स्वामी राम सेवहों तोइ।
हरि ! करहु करुणा नाथ मोइ॥ ध्रु ं॥

पद

कलि युगे नर तनु भारते पाया पुनु
तुवा गुण नाम नाहि लियों।
परम अमिया रस तेजि तुवा नाम यश
बिषय गरल हामु पियो॥
दुर्ज्जन मनर सङ्गे पाप चय कैलों रङ्गे
नाकरिलों तोमार भकति।

सरि — समान।

लोभ मोह काम क्रोध मद मान रिपु सङ्गे
मजिलोँ संसारे मूढ़ मति ॥
पतित पावन प्रभु तुवा पद पङ्कज
ताहे शरण लेहोँ जानि।
तुवा जन सङ्गे नाम रहु मुहे अबिराम
कहतु माधव परमाणि ॥ ६ ॥

गीत राग– श्यामगड़ा (ताल परि)

शुनलो पण्डित !
हरि पद सेवा रसे थिर करु चित्त ॥ ध्रुं ॥

पद

अनन्त निगम बन गहन अपार।
भैल क्षीण बुद्धि अर्थ करिते बिचार ॥
तारे देखि मने दुःख लागय आमार।
करियो सादर इतो उपदेश सार ॥
तिनि गुणमय वेद बन परिहरा।
गोवालीर घरे गैआ ब्रह्म चिनि धरा ॥

माधव दास मुरुख मति कहये
गति गोबिन्द दुहु चरणा ॥ १२ ॥

गीत राग– माहुर [ताल परि]

मन मेरि हरि सङ्गे मित बन्धायो।
ऐचन यतन कियो सब छोड़ि
सन्त सङ्गति रति लायो ॥ ध्रुं ॥

पद

सज्जन साथहि एकु मिलन किये
अर्वनिशि हरि गुण गायो।
तेजिया सयल मनोरथ आवरि
हरि पदे प्रेम मिलायो ॥
पुनु पुनु आया गमन एड़ायो
माया भरम बाहुड़ायो।
कहये माधव तव हरि पद सेवा
परमानन्द सुख पायो ॥ १३ ।

गीत राग— भाटियाली (रच्छ एकताली)

गोपाल भाबियो मन सकल यतने।
हरि बिने केने आन चिन्ता अकारणे ॥ ध्रु ॥

पद

अथिर जीवन धन यौवन सकल।
कमल पत्र नीर यैचन चञ्चल ॥
जानिया भजियो मन इसब तेजिया।
संसार सागरे मन नमर मजिया ॥
हरिर मायार फान्दे जीव भैल बन्दी।
इ तिनि भुवने पलाइबार नाहि सन्धि ॥
गुणि चावा मन तुमि एड़ाइबा कमने।
फान्दोत्राल गोबिन्दर धरियो चरणे।
निज प्रियतम हरि जगत निबास।
भजियो चञ्चल मन तेजिया आलास ॥
कहय माधव हरि; अगतिर गति।
मायार फान्द एड़ाइ मन पाइबा यदुपति ॥ १४ ॥

पलाइबार = भागनेको।

गीत राग— कामोद [ताल परि]

नन्देर नन्दन गोपिनी आगे ।
कर पाति हरि लवणु मागे ॥ ध्रुं ॥

पद

बोलत वाणी गोवारीक चाया ।
नवीन लवणु देहु गोप आया ॥
यो हरि दाता पदारथ चारि ।
मागत लवणु सोहि मुरारि ॥
शिव बिरिञ्चि करु याक सेवा ।
लवणु मागि फिरय सोहि देवा ।
सनक सनातन याकु धियाइ ।
सोहि लवणु मागे गोपिनीक ठाइ ॥
अभय दान करु योहि हाते ।
गोपिनीक आगे सोहि कर पाते ॥
मुकुति मिलावत याकेरि नामे ।
मागय लवणु गोवारीक ठामे ।
यो हरि थिक निजानन्द सुखे ।
सो हरि लवणु मागय कोन दुखे ॥

करत भकति हरिको अधीना।
ओहि रस गावत माधव दीना॥ १५॥

गीत राग— भाटियाली (रच्छ एकताली)

हरि मौर ए दीन दयाल।
के जानिते पारय तोमार ठाकुराल॥ ध्रु॥

पद

नाहि जन्म तोमार तथापि जन्म धरा।
सोहि जन्मे जीवर जनम दूर करा॥
सहजे अकर्त्ता कर्म्म करा अपर्य्यन्त।
सोहि कर्म्मे जीवर कर्म्मर करा अन्त॥
तुमि प्रभु निर्गुण गुणर सीमा नाइ।
निर्गुण होवय जीव सेहि गुण गाइ॥
कहय माधव मेरि ओहि आशा मने।
सहजे पीरिति मागों तोमार चरणे॥ १६॥

आगे = सन्मुख।

गीत राग – बराड़ी (ताल मान ज्योति)

हरिर बंशीर भाइ शुनियो कारण ।
यि हेतु बंशीर स्वरे मोहे त्रिभुवन ॥ ध्रु ॥

पद

निज बंशी भैल मूल प्रकृति प्रथम ।
सात गुटि रन्ध्रे सात प्रकृति नियम ॥
हरिर अधरे फुङ्के पुरुष चैतन्य ।
जड़ बंशी प्रकृति करावे सचेतन ॥
कोमल अङ्गुलीचय रन्ध्र मध्ये चालि ।
बहुरसे बाँशीटी बजान्त बनमाली ।
यिटो निज माया मुहि आछे चराचरे ।
हरिर बंशीये त्रिभुवन मोह करे ॥
एहि हेतु बाँशी निज माया भगवन्त ।
त्रिभुवन मुहि निरवधि बजावन्त ॥
मोहन बंशीर निज कैलो प्रयोजन ।
कहय माधव मोर गति नारायण ॥ १७ ॥

पुत्रार गीत राग— श्याम (ताल परि)

तेज रे कमलापति परभाते निन्द ।
तेरि चान्द मुख पेखों उठरे गोविन्द ॥ ध्रु ॥

पद

रयणी बिदूर दिश धवली बरण ।
तिमिर फेरिया बाज रबिर किरण ॥
शतपत्र बिकशित भ्रमरा उड़ाइ ।
ब्रज बधू दधि मथे तुवा गुण गाइ ॥
दाम सुदाम डाके तेरि लैया नाम ।
हेर देख उठिया आसिल बलोराम ॥
नन्द गैल बाथाने गोबाल गेल पाल ।
सुरभि चारिते लागे उठरे गोपाल ॥
क्षीर लवमी लयो शिङ्गा बेत बेणु ।
सकाले मेलियो बत्स हाम्बालावे धेनु ॥
कहय माधव माइ किनो तपसाइला ।
त्रिजगत पति हरि राखोवाल पाइला ॥ १८ ॥

रयणी = रजनी । फेरिया : फाड़िया ।

पुवार गीत राग— श्याम (ताल परि)

परभाते सुमरों गोविन्द हृषीकेश ।
चिदानन्द मूरुति कपट गोप बेश ॥ ध्रुं ॥

पद

सत्य सनातन नित्य निरञ्जन देव ।
अनादि अनन्त योहि बिने नाहि केव ॥
सोहि प्रभु नाम धरे नन्दकु नन्दन ।
करों परभाते तयु चरणे बन्दन ॥
सनक सनन्द योगी याहाकु धियाय ।
सकल निगमे याकु बिचारि नापाय ॥
चतुर बयन भव करु याकु सेव ।
गोप नन्द भवने बेकत सोहि देव ॥
अरुण नयन नख अरुण बरण ।
अरुण अधर चारु अरुण चरण ॥
नीलमणि निभ तनु ए जगजीवन ।
कहय माधव गति नन्दकु नन्दन ॥ १६ ॥

गीत राग— अहिर [ताल ज्योति]

गोविन्द चिन्तहु बाल गोपालं ।
रतन तलप मह शयने रहतु हरि
पङ्कज नयन बिशालं ॥ ध्रं ॥

पद

कर पङ्कज युग धरि पद पङ्कज
बयन पङ्कजे निबेशितं ।
मुनिबर कैचन छोड़ि अमिया
तयु पद पङ्कज रस पीतं ॥
ओहि मन भाबि परम रति कौतुके
निज पद पङ्कज पानं ।
बालक केलि अमिया रस सागर
माधब कह परमाणं ॥ २० ॥

बड़गीत

स्वरलिपि

और तालका आघ्र्या ।

स्वरलिपि संकेत :--

उदारा ग्राम का स्वर — स्‍ा, रे॒, ग्‍ा इत्यादि ।

मुदारा ग्राम का स्वर— सा, रे, गा ,, ।

तारा ग्राम का स्वर— सा́, रे́, गा́ ,, ।

शुद्ध स्वर— सा, रे, गा, मा, पा, धा, नि ।

कोमल स्वर— ऋ, ज्ञ, द, ण ।

कड़ि स्वर-- ह्म ।

गीत राग धनश्री—ताल एकतालि (या परि)

नारायण ! काहे भकति करो तेरा । (पृः ४)

गायन-बायन— श्रीयादव चन्द्र पाठक

सुन्दरीदिया सत्र ।

॥ राग आलाप ॥

॥ १म खन्ड ॥ धुरा ॥

सा	झ	झ	झ	मा	पा	द	पा	मा	—	—	—
ह	रि	रा	म	रा	०	०	०	०	०	०	०
मापा	—	—	पा	मा	मा	—	झ	—	—	—	
म ०			रा	०	०	०	०	०	०	०	
रे	मा	झ	रे	मा	झ	रे	सा	ण्	ण्सा	ण्रा	
म	०	०	रा	०	०	०	०	०	००	००	
पा	—	—	सासा	सा	सा	सा	सा	सा	सा		
म	०	०	हरि	रा	०	म	रा	०	म		

॥ २य खन्ड ॥

सा	—	—	—	ण	—	—	—	र्सा	—	णधा
ए	०	०	०	ए	०	०	०	ए	०	००
ण	ण	र्सा	र्सा	र्सा	र्सा	—	र्सा			
ए	०	०	ह	रि	रा	०	म			
र्सा	—	र्सा	र्सा	—	र्सा	र्सासा				
रा	०	म	रा	०	म	राम				

ण — — — र्सा — ण धा नि निर्सा
ए • • • • • ए • • •

र्सा र्सा र्सा — र्सा पा ण र्सा ज्ञ́
ह रि रा • म रा • म •

रें र्सा रें र्सा
• • • •

ण ण र्सा ण धा ण र्सा नि धा पा
रा • • • • • • • • •

मा ज्ञ मा — — —
• • • • • •

पा ण — — धा पा मा पा — — मा पा मा पा
म • • • • • रा • • • आ • • •

मा ज्ञ — — — ज्ञ ज्ञ मा ज्ञ रे मा ज्ञ रे सा ण्
म • • • • रा • • • • • • • • •

ण्सा ण्ध्प् — — सासा सा — सा सा सा सा सा
•• •• म • • हरि रा • • म रा • म

॥ ३य खन्ड ॥

र्सा — — — ण — — — र्सा — ण धा
ए • • • ए • • • ए • • •

ण र्सा ण धा ण र्सा र्सा र्सा र्सा — र्सा
• • • • • • ह रि रा • म

ज्ञ́ — — — रे́ ज्ञ́ मा́ पा́
ए • • • ए • • •

गा́ — मा́ ज्ञ́ रे́ मा́ गा́ रे́ सा́
ए • • • • • • • •

ण — सा́ — सा सा́ — सा́ सा́ — सा सा́ — सा́
• • ह • रि रा • म रा • म रा • म

॥ ४र्थ खन्ड ॥

१म खन्डका पुनराबृत्ति ।

॥ ताल एकतालि ॥ २० मात्रा ॥

॥ गा-मान या मूल बाजना ॥

+			०		२			०	
थेनि	ताखित्-	गुर.	गुर.गुर	गुर.	धिनि	तं	—	—	—
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
थेनि	ताखित्-	खुर.	खुर.खुर	खुर	खिति	तं	—	—	—
११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०

॥ गीत ॥

+			०		२			०	
–	–	–	ज्ञ	–	ज्ञ	–	–	ज्ञ	मा
			ना	०	०	०	०	रा	०
मापा	ण	–	धा	–	पा	–	–	–	पा
य	०	०	०	०	०	०	०	०	रा
–	–	–	नर्सां	ज्ञं	रें	सांरें	सां	ण	णधा
			का०	०	हे	०	०	भ	००
मा	ज्ञ	मा	–	ज्ञ	ज्ञ	मा	पा	–	मा
क	०	०	०	ति	क	०	०	०	रो
मा	–	ज्ञ	रे	–	सा	–	–	–	–
ते	०	०	०	०	रा	०	०	०	०
पा	–	–	मा	पामा	ज्ञ	–	–	मा	–
मे	०	०	०	००	रि	०	०	पा	०
पा	–	–	सां	ण	सां	–	–	सांण	–
म	०	०	रु	०	म	०	०	न	०

(च)

सा́ — —	ज्ञ́ —	ज्ञ́ज्ञ́ रे́ सा́	णधा ण
मा ० ०	० ०	ध० ० ०	व० ०
ण सा —	रे́ सा́	ण — —	धा पा
घ ने ०	० ०	घ ० ०	० न

इहाँ "मेरि पामरु मन" का पुनराबृत्ति ।

सा́ — —	गा́ —	ज्ञ́ज्ञ́ रे́ सा́	णधा ण
मा ० ०	० ०	ध ० ० ०	व ० ०
पा — —	पा ण	सा́ — —	सा́ —
० ० ०	घ ने	घ ० ०	न ०
— पा ण	पा ण	ण सा́ —	सा́ ज्ञ
० ० ०	घा ०	तु ० ०	क ०
ण पा —	(पा) ण —	पा — —	(मा) ज्ञ —
पा ० ०	० ०	प ० ०	ना ०
मा — —	पा —	(मा) ज्ञ — —	— —
छो ० ०	० ०	रा ० ०	० ०

— —	— —	— —	सां ज्ञ
			य त
ज्ञं ज्ञं रेंसां —	णधा ण	माज्ञ मा —	द पा
जी• •• •	व• •	ज• • •	० ०
मा ज्ञ —	मा ज्ञ	ज्ञरे — —	सा —
ङ्ग ० ०	० ०	म ० ०	० ०
— — —	ज्ञ मा	पा — —	ण धा
० ० ०	की ०	ट ० ०	प ०
णसां रेंसां —	— ण	धा — —	पा —
त० ०० ०	• ०	ङ्ग ० ०	म ०
— — —	पा ण	नि सां — —	सां रें
• • •	की •	ट • •	प ०
सां रेंसां ण	धा णधा	माज्ञ मा —	पा -माज्ञ
त •• •	• ••	ङ्ग ० •	म •••
— — —	ज्ञ मा	मापा — —	— मा
• • •	अ ग	न ० ० •	• ग

मा पामा ज्ञ | रे सा | सा — — | — मा
ज •• • | ग • | ते • • | • रि

मा — पामा | ज्ञ — | रे — — | सा —
का • •• | • • | • • • | या •

— — — |
• • • |

"सबकहु मारि ··· ··· ··· भुत दाया" का सुर
"मेरि पामरु मन ···" का सदृश।

गीत ॥ राग श्याम ॥ तेज रे कमलापति परभाते निन्द ॥

गायन – श्रीमणिराम गायन मुक्तियार
बायन – श्रीमणिराम दत्त मुक्तियार
पुरणि कमलाबारी सत्र

॥ राग आलाप ॥

॥ १म खन्द ॥

सा रे गा मापा — पा — मा — ह्म पा धा — —
रा • • आम • रा • म • अ • • • •

पा ह्म पा धा पा ह्म पा मा गा — — — गामा गामा गारे — — — —
• • • • • • • • • • • • •• •• •• • • • •

गाँ —	गामा गा	रे नि॒ —	रे रे	रेगा रेनि॒	नि॒ रे —
या •	:: •	बा • •	• •	जे॰ ::	र बि •
गा पा	पा धापा	पाधा पाधा नि	नि —	नि नि	नि — —
र •	कि ::	र॰ :: •	ण •	ह रि	ओ • •
नि सां	नि धा	नि — —	रे गां	रे सां	निसां सांनि धा
ओ •	रे •	र • •	ज •	• •	• नी :॰ •
पा —	पा •	पा मापा धापा	मापा मागा		
बि •	• •	दू :: ::	र॰ ::		
— —	सा रे	नि॒ रे —	गा —	पा —	पा धा पा
	भा रे	स्व त •	प •	त्र •	बि • क

॥ गीत ॥

				•			+						
—	—	—	—	गा	गा	—	गा	—	गापा	धा	धानि	धा	
				ते	ज	०	अ	०	००	०	रे०	•	•
गा	—	गामा	गारे	धारे	गा	मा	गा	—	गामा	गारे	सा	—	—
क	०	००	००	म०	•	•	ला	•	००	००	प	•	•
नि़सा	नि़सा	ध़	—	ध़	रे	—	सा	—	नि़	ध़	प़	प़	—
••	•०	ति	•	प	र	•	भा	•	•	ते	नि	न्द	•
—	—	सा	रे	रे	गा	रे	गा	मा	गामा	पा	पा	—	—
•	•	आ	रे	ते	•	•	रि	•	•०	•	चा	•	•
पा	धा	पाधा	पामा	पा	धानि	धापा	मा	पा	मापा	मागा	गा	रेगा	मागा
न्द	•	•०	••	मु	स	•	•	•	••	००	पे	•०	•०

गारे गा	रे —	गा रेगा पा	पाधा पा	मा गा	गामा गा रे
•• •	खु •	उ •• •	ठ• •	• •	•• • •
रेनि रे	नि॒ रेगा	गामा गामा गा	रे —	— —	— — —
रे •	गो ••	वि• •• न्	द •	• •	• • •
— —	गा रे	नि॒ — रे	गा —	पा —	पा धा पा
	आ रे	र • ज	नौ •	बि •	दू • र
पा मापा	धा —	पा धा नि	नि —	निधा पा	गा मापा धा
दि ••	श •	ध व •	लि •	•• ब	र •• •
पा —	मा षा	मा गा —	रे —	नि॒रे गा	गा — —
ख •	• •	• • •	• •	•• •	ति • •
गा पा	गा पा	धा निधा पा	गा मा	गामा गारे	रे नि॒रे गामा
मि •	• •	र •• •	फे •	•• ••	रि •• ••

रे गा गा — रेगा पा गामा गा रे सा रेगा गामा गामा
रा म रा ॰ आ॰ ॰ ॰॰ ॰ ॰ ॰ ॰॰ ॰॰ ॰॰

गा रे — — — सा सा रे गा पा — — — गामा गामा गा रे सा — —
॰ ॰ ॰ ॰ ॰ रा म रा ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰॰ ॰॰ रा म ॰ ॰ ॰

॥ २य खन्ड ॥

गा पा धा पा धा र्सा र्सा र्सा र्सा र्सा र्सा — — सा
ए ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ह रि रा म रा ॰ ॰ म

॥ ३य खन्ड ॥

र्सारें गं — — — रेंगं पं — — —— गं — — —
ए॰ ॰ ० ० ० ॰० ० ० ०००० ० ॰ ॰

रें — — — र्सा र्सा र्सा र्सा र्सा र्सा सा
॰ ॰ ॰ ॰ गो वि न्दे रा म रा म

॥ ४र्थ खन्ड ॥ १म खन्ड का पुनराबृत्ति ।

॥ ताल परिताल ॥ २४ मात्रा ॥

॥ गा-मान या मूल बाजना ॥

+		२		०		
ता	ओ	ता	ओ	खिति	ताक्	धेइ
१	२	३	४	५	६	७
३		४		०		
धिन्	ताथि	ता	ओ	खिति	ताक्	धेइ
८	९	१०	११	१२	१३	१४

(ब)

पा मापा	धा —	पा धा पा	नि —	निधा पा	पा मापा धा
शि ••	त •	भ्र म •	रा •	•• उ	ड़ा •• •
पा —	सा रे	रे गा रे	गा मा	गामा पा	पा — —
इ •	आ र	ब्र • •	ज •	•• •	ब • •
पा धा	पाधा पामा	पा धानि धापा	मा पा	मापा मागा	गा रेगा मा
धू •	•• ••	द धि• ••	• •	•• ••	म •• •
गारे गा	रे —	गा रेगा पा	पाधा पा	मा गा	गामा गा रे
•• •	थे •	तु •• •	वा• •	• •	•• • •

नि॒	–	नि॒	रेगा	गामा	गामा	गा	रे	—
गु	o	ण	oo	गाo	oo	o	इ	—

दूसरा पदका सुर— १म पदका सदृश ३य और ५म पद ।
२य पदका सदृश ४र्थ और ६ष्ठ पद ।



श्रीमन्त शंकर धर्म्म कृष्टि केन्द्रीय परिषद

सभापति : श्री पूर्णचन्द्र देव गोस्वामी
सत्राधिकार नरोवा सत्र बटद्रवा
उप सभापति : श्री गौरीकान्त देव गोस्वामी
सत्राधिकार जराबारी सत्र
श्री गोलोकचन्द्र कार्कित
जामूगुरी हाट
साधारण सम्पादक : श्री गिरिकान्त देव अधिकारी
सत्राधिकार सुन्दरीदिया सत्र
सहयोगी सम्पादक : अध्यापक भवानन्द डेका एम० ए०
कार्यालय सम्पादक
और कोषाध्यक्ष : श्री गौतम चन्द्र मरल एम० ए०
कृष्टि शाखा समिति :—
सभापति : श्री भवकान्त गोस्वामी,
सत्राधिकार, कमलावारी सत्र
उप सभापति : श्री खगेन्द्र नाथ दास बी० ए०
संगीत विशारद
श्री गजेन्द्र नाथ बरुवा
सम्पादक : श्री भारतचन्द्र महन्त
श्री महादेव बायन
शरण शाखा समिति :
सभापति : श्री धर्मेश्वर महन्त डेका सत्रिया
बरपेटा सत्र
उप सभापति : श्री इला राम दास
श्री लक्ष्मेश्वर शइकीया
सम्पादक : अध्यापक मधु ओझा एम०एस०सी०
श्री माधब चन्द्र भागवती